IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कटनी जिले का पुरातत्व : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन

ARCHAEOLOGY OF KATNI DISTRICT: A STUDY OF HISTORICAL AND CULTURAL HERITAGE

Smt. Kiran Patel
Assistant Professor, History
Government Mahakoshal College, Jabalpur (Madhya Pradesh)

शोध-सार

मध्य प्रदेश का कटनी जिला ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र महाकौशल, बुंदेलखंड और बघेलखंड की सांस्कृतिक सीमाओं के संपर्क क्षेत्र में स्थित होने के कारण विभिन्न ऐतिहासिक परंपराओं के अंतर्संबंध का साक्षी रहा है। कटनी जिले में प्रागैतिहासिक अवशेषों से लेकर गुप्तकालीन, कलचुरीकालीन तथा मध्यकालीन स्थापत्य और मूर्तिकला के अनेक प्रमाण प्राप्त होते हैं। रूपनाथ, तिगवां, बिलहरी, करीतलाई, बहोरीबंद तथा विजयराघवगढ़ जैसे स्थल जिले की समृद्ध पुरातात्त्विक विरासत को स्पष्ट करते हैं।

बहोरीबंद तहसील का रूपनाथ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ अशोक का शिलालेख प्राप्त हुआ है। यह स्थल मौर्यकालीन इतिहास और बौद्ध धर्म के प्रसार के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करता है। तिगवां का कंकाली देवी मंदिर गुप्तकालीन स्थापत्य एवं मूर्तिकला का उल्लेखनीय उदाहरण है।

बिलहरी प्राचीन पुष्पावती नगरी के रूप में कलचुरीकालीन स्थापत्य, मंदिरों, बावड़ियों और अभिलेखीय परंपरा के लिए महत्वपूर्ण है। वहीं करीतलाई में विष्णु-वराह की विशाल प्रतिमा, मंदिर-अवशेष, जैन प्रतिमाएँ तथा अभिलेख इस क्षेत्र की विकसित मूर्तिकला एवं धार्मिक विविधता को प्रमाणित करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की केंद्रीय संरक्षित स्मारकों की सूची में कटनी के करीतलाई, बिलहरी, रूपनाथ, तिगवां सहित अनेक स्थल दर्ज हैं। इस शोध का उद्देश्य कटनी जिले के प्रमुख पुरातात्त्विक स्थलों का ऐतिहासिक एवं स्थापत्यगत अध्ययन करते हुए उनकी वर्तमान स्थिति, संरक्षण की आवश्यकता और सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाओं का विश्लेषण करना है।

प्रमुख शब्द: पुरातत्व,शिलालेख,अभिलेख रूपनाथ, कलचुरी, प्रागैतिहासिक, पुरातात्त्विक विरासत

परिचय:

पुरातत्व इतिहास के पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण साधन है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों के अध्ययन में, जहाँ लिखित स्रोत सीमित हैं, वहाँ पुरातात्त्विक अवशेष, अभिलेख, मूर्तियाँ, स्थापत्य, सिक्के, मृद्भांड तथा शैलचित्र अतीत को समझने के महत्वपूर्ण आधार बनते हैं। कटनी जिला मध्य प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में स्थित है और इसकी भौगोलिक स्थिति इसे ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है। जिले की सांस्कृतिक संरचना पर महाकौशल, बुंदेलखंड और बघेलखंड की परंपराओं का प्रभाव दिखाई देता है। जिला प्रशासन के ऐतिहासिक विवरण में भी कटनी को इन तीन सांस्कृतिक क्षेत्रों के संगम के रूप में रेखांकित किया गया है। कटनी का पुरातात्त्विक इतिहास केवल किसी एक काल तक सीमित नहीं है। यहाँ प्राचीन शैलाश्रयों और शैलचित्रों से लेकर मौर्यकालीन अभिलेख, गुप्तकालीन मंदिर, कलचुरीकालीन मूर्तिकला एवं स्थापत्य और मध्यकालीन दुर्गों तक की निरंतरता दिखाई देती है। इस दृष्टि से कटनी का पुरातत्व मध्य भारत के राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और कलात्मक इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोगी क्षेत्र है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. कटनी जिले के प्रमुख पुरातात्त्विक स्थलों की पहचान एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. जिले में उपलब्ध अभिलेखीय, स्थापत्य एवं मूर्तिकला संबंधी प्रमाणों का विश्लेषण करना।
3. मौर्य, गुप्त एवं कलचुरी कालीन सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।
4. कटनी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता को पुरातात्त्विक स्रोतों के आधार पर समझना।
5. पुरातात्त्विक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन की संभावनाओं पर विचार करना।

शोध-पद्धति:

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

कटनी जिले की पुरातात्त्विक पृष्ठभूमि:

कटनी क्षेत्र में मानव निवास और सांस्कृतिक गतिविधियों की प्राचीनता के संकेत विभिन्न पुरातात्त्विक अवशेषों से मिलते हैं। जिला प्रशासन के ऐतिहासिक विवरण में झिंझरी क्षेत्र के शैलचित्रों का उल्लेख मिलता है,। ये शैलचित्र क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव की उपस्थिति और उसकी कलात्मक अभिव्यक्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके बाद मौर्यकाल में रूपनाथ का महत्व सामने आता है। गुप्तकाल में तिगवां जैसे स्थल विकसित हुए, जबकि बाद के काल में कलचुरी शासकों के समय बिलहरी एवं करीतलाई जैसे क्षेत्र कला और स्थापत्य के महत्वपूर्ण केंद्र बने।

इस प्रकार कटनी की पुरातात्त्विक परंपरा को मोटे तौर पर निम्न चरणों में समझा जा सकता है—

प्रागैतिहासिक चरण → मौर्यकाल → गुप्तकाल → कलचुरीकाल → मध्यकाल → औपनिवेशिक काल।

प्रागैतिहासिक शैल चित्र :

कटनी जिला मुख्यालय के पास स्थित झिंझरी में चितरंजन शैल वन एक ऐसी धरोहर जो प्रागैतिहासिक शैल चित्रों, पाषाण युग के औजारों और आदिम मानव के जीवन की गवाही देती नजर आती है. चितरंजन रॉक फॉरेस्ट पाषाण युग की कलाकृतियों और अवशेषों से भरा है. इतिहास की अमिट छाप को संजोए इस रॉक फॉरेस्ट में हजारों वर्ष पुराने शैल चित्र हैं, जिनके माध्यम से हमें अपनी प्राचीन सभ्यता के बारे में जानकारी मिलती है. झिंझरी के चितरंजन शैल वन में कई ऐसी चट्टाने हैं जहां हजारों साल पुराने ऐसे चित्र और कलाकृतियां उकेरी गई हैं, जो आदिमानव के रहन-सहन, हथियारों और शिकार की शैली को दर्शाती हैं. यह स्थान पाषाण युग के मानव इतिहास और उनकी संस्कृति को दर्शाता है. ये रॉक पेंटिग्स लगभग 10 हजार साल से ज्यादा पुरानी हैं. इसमें चूना पत्थर की मेंढक के आकार जैसी विशाल चट्टानें और आदिमानव के जीवन और शिकार को दर्शाते कई शैल चित्र देखे जा सकते हैं मौर्यकालीन स्थल -रूपनाथ : कटनी जिले के बहोरीबंद क्षेत्र में स्थित रूपनाथ कटनी जिले के सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थलों में से एक है। जिला प्रशासन इसे पुरातात्त्विक एवं धार्मिक महत्व का स्थल बताता है। यहाँ प्राकृतिक जलकुंड, गुफा तथा अशोक का शिलालेख एक साथ विद्यमान हैं। रूपनाथ का सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक प्रमाण अशोक का शिलालेख है। यह अभिलेख ब्राह्मी लिपि एवं प्राकृत भाषा की अभिलेखीय परंपरा से संबंधित है और अशोक के धम्म तथा बौद्ध धर्म से जुड़े ऐतिहासिक अध्ययन में उपयोगी है। रूपनाथ का महत्व केवल अभिलेख तक सीमित नहीं है। यहाँ प्राकृतिक चट्टानी संरचनाएँ, गुफा तथा जलकुंड भी हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राकृतिक भू-दृश्य और धार्मिक गतिविधियों का इस स्थल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा।

गुप्तकालीन कला एवं स्थापत्य :

तिगवां (जिसे पहले तिगावा भी लिखा जाता था) मध्य प्रदेश के कटनी जिले के बहोरीबंद क्षेत्र में स्थित तिगवां गुप्तकालीन स्थापत्य का महत्वपूर्ण केंद्र है। इसकी स्थापत्य कला की प्राचीनता को देखते हुए, यह स्थान कभी काफी महत्वपूर्ण रहा होगा। अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1873-75 में इस स्थल का दौरा किया था और उन्होंने तिगावा नाम का अर्थ "तीन गाँव" बताया है। ये तीन गाँव तिगवां, आमगावां और देवरी थे, जो एक दूसरे के निकट स्थित थे। कनिंघम ने गाँव में कम से कम 36 मंदिरों के अवशेष मिलने का उल्लेख किया है, जिनमें से कई को रेल निर्माण के लिए तैयार सामग्री प्राप्त करने वाले रेलवे ठेकेदारों ने तोड़ दिया था। उन्होंने मंदिरों के तीन समूहों का उल्लेख किया है: 4 से 6 फीट के आकार वाले मंदिर तीन तरफ से खुले हुए थे, जबकि चौथी तरफ खुली थी; 7 से 10 फीट के आकार वाले मंदिर चौथी तरफ एक द्वार के साथ बनाए गए थे; और 12 से 15 फीट के आकार वाले मंदिर सामने एक मुख-मंडप (पोर्टिको) के साथ बनाए गए थे।

तिगवान प्राचीन काल में भरहुत को रूपनाथ होते हुए त्रिपुरी से जोड़ने वाले मार्ग पर स्थित था। इस प्राचीन मार्ग पर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र होने के कारण, इस शहर को एक निश्चित समय पर किलेबंद किया गया था, जिसका प्रमाण झंझनगढ़ का किला है।

कंकाली देवी मंदिर – लगभग 36 मंदिरों के परिसर में यह एकमात्र बचा हुआ मंदिर है, बाकी सभी मंदिर ध्वस्त कर दिए गए थे और उनकी सामग्री का उपयोग रेलवे निर्माण में किया गया था। मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर है और यह एक छोटे से जगती (चबूतरे) पर बना है। इसमें एक गर्भगृह और एक मुखमंडप है , मुखमंडप चार स्तंभों पर टिका एक खुला मंडप है । कुछ समय बाद, मंडप के पार्श्व खुले स्थानों को दीवार से ढक दिया गया और अंदर मूर्तियां स्थापित की गईं। गर्भगृह बाहर से 12.75 फीट वर्गाकार और अंदर से लगभग 8 फीट वर्गाकार है। इस पर एक सपाट छत है। मुखमंडप के स्तंभ देखने में भारी लगते हैं क्योंकि उनका निचला भाग सादा अष्टकोणीय है। इसके ऊपर एक अष्टकोणीय भाग है, जिसके बाद सोलह भुजाओं वाला भाग और फिर एक वृत्ताकार भाग है। वृत्ताकार भागों के ऊपर एक पूर्ण-घट (भरा हुआ कलश) है। इसके ऊपर एक वर्गाकार आधार है जो एक वर्गाकार शीर्ष को सहारा देता है। शीर्ष भाग के प्रत्येक फलक पर दो शेर उकेरे गए हैं जिनके बीच में एक पेड़ है। एक फलक पर आम का पेड़ बना है, लेकिन बाकी फलकों पर पेड़ की पहचान ठीक से नहीं हो पाई है। शीर्ष भाग के आधार पर दो चैत्य मेहराब बने हैं जिनके अंदर एक मानव सिर है।गर्भगृह के द्वार पर चार शाखाएँ (पट्टियाँ) हैं। दो शाखाओं पर पुष्प अलंकरण हैं और दो सादी हैं। पार्श्व स्तंभ मुख-मंडप के समान ही पैटर्न के हैं । स्तंभों के शीर्ष पर नदी देवियों की प्रतिमाएँ स्थापित हैं: गंगा एक मकर के ऊपर , सीताफल के वृक्ष के नीचे विराजमान हैं, और यमुना एक कछुए के ऊपर, आम के वृक्ष के नीचे विराजमान हैं। दोनों नदी देवियों को फल तोड़ते हुए दर्शाया गया है, जो नदी देवियों की प्रतिमा-कला के साथ प्राचीन शाला-भंजिका रूपांकन के विलय का प्रतीक है। चौखट सादी है और उसके ऊपर के मेहराब में तेरह सादे वर्गाकार उभार हैं। गर्भगृह के भीतर नरसिम्हा की एक प्रतिमा है जो मंदिर के काल की ही है। हालाँकि, यह मंदिर की मूल-बेरा (मुख्य प्रतिमा) प्रतीत नहीं होती है । कनिंघम ने मुख-मंडप की पार्श्व दीवारों में स्थापित चार मूर्तिकला पैनलों का उल्लेख किया है । हालांकि, अब दक्षिणी दीवार पर केवल दो पैनल ही बचे हैं, एक चामुंडा का और दूसरा शेषशायी-विष्णु का। कनिंघम द्वारा उल्लिखित काली और वराह के पैनल अब इस मंडप की पार्श्व दीवार पर नहीं हैं।

कलचुरी कालीन स्थापत्य-

बिलहरी : पुष्पावती नगरी और कलचुरी कला: बिलहरी का विशेष महत्व कलचुरी इतिहास के अध्ययन में है। यहाँ प्राप्त अभिलेख कलचुरी शासकों तथा उनके प्रशासनिक एवं धार्मिक संरक्षण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की सूची में बिलहरी के तपसी मठ, विष्णु वराह मंदिर तथा लाडकी का टीला जैसे स्मारक भी दर्ज हैं।

85 मंदिर, 13 बावड़ी से घिरी है पुष्पावती नगरी बिलहरी –कटनी जिला मुख्यालय से महज 15 किलोमीटर दूर स्थित पुष्पावती नगरी बिलहरी 85 मंदिर और 13 बावड़ियों से घिरी है। यह स्थान न सिर्फ 945 ईसवीं के इतिहास को संजोये हुए है बल्कि यहां की पुरातात्विक धरोहरों की नक्काशी खुद ब खुद अतीत को बयां कर रही हैं। प्रतिदिन सवा मन सोना दान करने वाले दानवीर राजा कर्ण के इस स्थान का खास स्थान है। यहां पर बनी गढ़ी, किला, फांसीघर, काम कंदला के पत्थरों की शिल्प सम्मोहित तो करती ही है, साथ ही लक्ष्मण सागर तालाब का अलग सौंदर्य है। बिलहरी में स्थित प्राचीन विशाल मंदिरों के अलावा किले के अवशेष, फांसी देने का स्थान, रानी की सिंगार चौरी, बावली आदि स्थान भी दर्शनीय हैं। यहां पर चंडी देवी मंदिर को लेकर किवदंती है कि राजा कर्ण सूर्योदय से पूर्व स्नान करके चंडी देवी मंदिर जाते थे और वहां कड़ाहे में उबलते तेल में कूद जाते थे। देवी उन पर अमृत छिड़ककर जीवित करती थीं और ढाई मन सोना प्रदान करती थीं। देवी से प्राप्त सोना में से सवा मन सोना राजा सुबह गरीबों को दान में दिया करते थे। इसके अलावा बिलहरी में कलचुरी वंश का 10वीं शताब्दी का अभिलेख, कलचुरी शासक युवराज द्वितीय का इतिहास, कलचुरी वंश की उत्पत्ति एवं प्रारम्भिक शासकों की जानकारी, माधवानल और कामकंदला की प्रेम गाथा, तरणतारण मंदिर, कल्चुरी शासक की प्राचीन गढ़ी, तपसी मठ, पुरातत्व का संग्रहालय, 85 मंदिर, 13 बावड़ी, गया कुंड, लक्ष्मण सागर तालाब, नौ देवियों के प्राचीन मंदिर, काल भैरव मंदिर, काम कंदला आदि दर्शनीय स्थल हैं।

विजयराघवगढ़ : कटनी जिले की पुरातात्त्विक विरासत केवल प्राचीन एवं मध्यकाल तक सीमित नहीं है। विजयराघवगढ़ का किला आधुनिक इतिहास और स्थापत्य दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। जिला प्रशासन के अनुसार किले का निर्माण 1826 के आसपास प्रारंभ हुआ और कई वर्षों में पूरा हुआ। इसकी भौगोलिक स्थिति भी इसकी सुरक्षा व्यवस्था की विशेषता को दर्शाती है—दो ओर नदियाँ और एक ओर पहाड़ी क्षेत्र इसकी प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। किले में रंगमहल, रनिवास, राघवजी

मंदिर तथा दीवारों की नक्काशी उल्लेखनीय हैं। विजयराघवगढ़ का संबंध 1857 के विद्रोह से भी जोड़ा जाता है। राजा सरयूप्रसाद की भूमिका इस क्षेत्र के औपनिवेशिक प्रतिरोध के इतिहास को महत्वपूर्ण बनाती है। इस प्रकार यह स्थल पुरातत्व, स्थापत्य और आधुनिक राजनीतिक इतिहास के अंतर्संबंध का उदाहरण है।

कटनी के पुरातत्व की प्रमुख विशेषताएँ:-

कटनी जिले के पुरातात्त्विक अध्ययन से निम्न प्रमुख विशेषताएँ सामने आती हैं—

1. कटनी में प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से लेकर मौर्य, गुप्त, कलचुरी, मध्यकालीन तथा औपनिवेशिक काल तक के प्रमाण उपलब्ध हैं।
2. धार्मिक विविधता - हिंदू, बौद्ध और जैन धार्मिक परंपराओं के प्रमाण एक ही भौगोलिक क्षेत्र में दिखाई देते हैं। करीतलाई और बहोरीबंद इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।
3. मूर्तिकला की समृद्ध परंपरा - वराह, विष्णु, शिव, पार्वती, गणेश तथा जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ इस क्षेत्र की मूर्तिकला परंपरा को स्पष्ट करती हैं।
4. अभिलेखीय महत्व - रूपनाथ का अशोक शिलालेख तथा बिलहरी एवं करीतलाई के अभिलेख इतिहास के पुनर्निर्माण के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
5. स्थापत्य परंपरा - तिगवां के गुप्तकालीन मंदिर से लेकर बिलहरी के मंदिर समूह और विजयराघवगढ़ के दुर्ग तक स्थापत्य की निरंतर विकासशील परंपरा दिखाई देती है।

संरक्षण की समस्याएँ:-

कटनी की पुरातात्त्विक विरासत अत्यंत समृद्ध होने के बावजूद इसके संरक्षण के सामने कई चुनौतियाँ हैं—

1. अनेक पुरातात्त्विक अवशेष खुले वातावरण में स्थित हैं।
2. प्राकृतिक क्षरण के कारण पत्थर की मूर्तियों एवं स्थापत्य को नुकसान पहुँचता है।
3. स्थानीय स्तर पर पुरातात्त्विक जागरूकता का अभाव दिखाई देता है।
4. कुछ स्थलों के संबंध में व्यवस्थित वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण की आवश्यकता है।
5. पुरातात्त्विक स्थलों और स्थानीय पर्यटन के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की सूची में कटनी जिले के अनेक स्मारकों को केंद्रीय संरक्षण प्राप्त होना इस क्षेत्र की राष्ट्रीय पुरातात्त्विक महत्ता को दर्शाता है।

निष्कर्ष:- कटनी जिले का पुरातत्व मध्य भारत के इतिहास की विविध परतों को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। जिले के पुरातात्त्विक स्थलों में विभिन्न ऐतिहासिक कालों की सांस्कृतिक निरंतरता दिखाई देती है। रूपनाथ का अशोक शिलालेख मौर्यकालीन इतिहास एवं धम्म की जानकारी देता है, जबकि तिगवां गुप्तकालीन मंदिर स्थापत्य और मूर्तिकला की उत्कृष्ट परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। बिलहरी कलचुरीकालीन राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा, जबकि करीतलाई अपनी वराह प्रतिमा, मंदिर अवशेषों, अभिलेखों और हिंदू-जैन मूर्तिकला के कारण विशेष महत्व रखता है। बहोरीबंद क्षेत्र की जैन प्रतिमा-परंपरा तथा विजयराघवगढ़ का दुर्ग इस विरासत को आगे मध्यकाल और आधुनिक काल तक विस्तारित करता है। अतः कटनी का पुरातत्व केवल स्थानीय इतिहास का विषय नहीं है, बल्कि यह मध्य भारत में धार्मिक सह-अस्तित्व, कला-विकास, स्थापत्य परंपरा, राजनीतिक इतिहास और सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है। आवश्यकता इस बात की है कि उपलब्ध पुरातात्त्विक सामग्री का वैज्ञानिक सर्वेक्षण, अभिलेखीकरण और संरक्षण किया जाए तथा इसे शोध एवं शिक्षा से जोड़ा जाए।

संदर्भ-सूची

1.कनिंघम, अलेक्जेंडर (1879)। 1873-74 और 1874-75 में मध्य प्रांतों की यात्रा की रिपोर्ट,खंड 9। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण। नई दिल्ली। पृष्ठ 42।
2. कनिंघम, अलेक्जेंडर (1879)। 1873-74 और 1874-75 में मध्य प्रांतों की यात्रा की रिपोर्ट, खंड 9। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण। नई दिल्ली। पृष्ठ 47।
3. सरस्वती, एस.के. (1940)। गुप्त युग में मंदिर वास्तुकला, जर्नल ऑफ द इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट, खंड 8 में प्रकाशित। पृष्ठ 149।
4. देवा, कृष्णा (1988). त्रिपुरी के कलचुरी: मंडपिका मंदिर, भारतीय मंदिर वास्तुकला के विश्वकोश - उत्तर भारत - उत्तर भारतीय शैलियों की नींव, खंड II, भाग 1 में प्रकाशित। ISBN 0195623134. पृ. 164
5.मध्य प्रदेश शासन, पुरातत्व एवं अभिलेखागार संबंधी प्रकाशित सामग्री।
6.जिला प्रशासन कटनी, कटनी का इतिहास एवं ऐतिहासिक स्थल।